॥ॐ श्री सद्गुरवे नमः॥

Law OF EQUI-MARGINAL UTILITY
OR
Law OF SUBSTITUTION
OR
Consumer's Equilibrium According TO MARSHALL

Ques. Make out a case for going back to the Marshallian approach to the theory of demand.

[माँग सिद्धान्त की मार्शलीय पद्धति को पुनर्प्रतिष्ठित करने के पक्ष में अपना तर्क दें]

Ans.

मनुष्य की आवश्यकताएँ अनन्त हैं, किन्तु उनकी पूर्ति के साधन सीमित है। अतः मनुष्य अपने सीमित साधनों से असीम आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। फिर भी, वह अपने सीमित साधन को इस तरह व्यय करना चाहता है ताकि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विभिन्न वस्तुओं का उपयोग करते समय वह कम उपयोगी वस्तु के बदले अधिक उपयोगी वस्तु का प्रतिस्थापन (Substitution) कर अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने की चेष्टा करता है। सम-सीमान्त उपयोगिता नियम [Law of Equi-Marginal Utility] हमारे इसी उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होता है। दूसरे शब्दों में, यह नियम यह बताता है कि एक उपभोक्ता का संतुलन कैसे होता है अर्थात वह अपने सीमित आय को किस प्रकार व्यय करें कि उसकी संतुष्टि अधिकतम हो।

सम-सीमान्त उपयोगिता नियम का उल्लेख सर्वप्रथम 1854ई० में Germany के अर्थशास्त्री Sir H.H. Gossen ने अपने द्वितीय नियम में किया था। इसलिए इसे Gossen का दूसरा नियम (Second Law of Gossen) भी कहा जाता है।

नियम की मान्यताएँ [Abbumption of the Law] :-

यह नियम भी अर्थशास्त्र के अन्य नियमों की भाँति कुछ मान्यताओं पर आधारित है, जैसे :-

1. इस सिद्धान्त में यह मान लिया गया है कि मुद्रा और आय की मात्रा में परिवर्तन होने पर भी इनकी सीमान्त उपयोगिता में कोई परिवर्तन नहीं होता है।
2. यह नियम इस बात की भी कल्पना कर लेता है कि प्रत्येक उपभोक्ता विवेकशील होता है तथा वस्तुओं से मिलने वाली सीमान्त उपयोगिता की गणना कर अपनी आय को खर्च करता है।
3. उपभोक्ता अपनी मुद्रा को बहुत थोड़ी-थोड़ी मात्रा में व्यय करता है। एवं
4. उपयोगिता को मुद्रा रूपी पैमाने से मापा जा सकता है।

उदाहरण तथा रेखाचित्र द्वारा नियम का स्पष्टीकरण :-

माना कि एक व्यक्ति के पास 8 रुपये हैं, जिन्हें वह दो वस्तुओं गेहूँ और चीनी पर व्यय करना चाहता है। इन दोनों वस्तुओं पर प्रत्येक एक रुपये के व्यय करने से प्राप्त उपयोगिताएँ निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है :-

द्रव्य (रु०) की इकाईयाँ	गेहूँ से उपयोगिता	चीनी से उपयोगिता
1	18 [1]	14 [3]
2	16 [2]	12 [5]
3	14 [4]	10 [7]
4	12 [6]	8
5	10 [8]	6
6	8	4
7	6	2
8	4	0

नियम की मान्यताएँ [Abbumption of the law] :-

यह नियम भी अर्थशास्त्र के अन्य नियमों की भाँति कुछ मान्यताओं पर आधारित है, जैसे :-

1. इस सिद्धान्त में यह मान लिया गया है कि मुद्रा और आय की मात्रा में परिवर्तन होने पर भी इनकी सीमान्त उपयोगिता में कोई परिवर्तन नहीं होता है।
2. यह नियम इस बात की भी कल्पना कर लेता है कि प्रत्येक उपभोक्ता विवेकशील होता है तथा वस्तुओं से मिलने वाली सीमान्त उपयोगिता की गणना कर अपनी आय को खर्च करता है।
3. उपभोक्ता अपनी मुद्रा को बहुत थोड़ी-थोड़ी मात्रा में व्यय करता है। एवं
4. उपयोगिता को मुद्रा रूपी पैमाने से मापा जा सकता है।

उदाहरण तथा रेखाचित्र द्वारा नियम का स्पष्टीकरण :-

माना कि एक व्यक्ति के पास 8 रुपये हैं, जिन्हें वह दो वस्तुओं गेहूँ और चीनी पर व्यय करना चाहता है। इन दोनों वस्तुओं पर प्रत्येक एक रुपये के व्यय करने से प्राप्त उपयोगिताएँ निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हैं :-

द्रव्य (रु०) की इकाईयाँ	गेहूँ से उपयोगिता	चीनी से उपयोगिता
1	18 [1]	14 [3]
2	16 [2]	12 [5]
3	14 [4]	10 [7]
4	12 [6]	8
5	10 [8]	6
6	8	4
7	6	2
8	4	0